

यौन शोषण और किशोरों के व्यक्तित्व में बदलाव: समाजशास्त्रीय और मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से विश्लेषण

¹यशवंत श्रीवास्तव, ²डॉ. सरबेस कुमार सिंह (सहायक प्रोफेसर)

¹शोधार्थी, ² शोध निर्देशक

¹⁻²विभाग: मनोविज्ञान, भारती विश्वविद्यालय, दुर्ग (छ.ग.)

सार

यह पत्र किशोरों में यौन शोषण के प्रभावों का अध्ययन करता है, जिसमें मानसिक और समाजशास्त्रीय आयामों पर विशेष ध्यान दिया गया है। अध्ययन में यह बताया गया है कि यौन शोषण किशोरों के व्यक्तित्व, सामाजिक संबंधों और मानसिक स्वास्थ्य पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाल सकता है, विशेष रूप से माध्यमिक विद्यालयों के संदर्भ में। यह अध्ययन यह उजागर करता है कि यौन आघात का अनुभव सामाजिक व्यवहार, संज्ञानात्मक विकास और आत्म-धारणा को कैसे प्रभावित कर सकता है। सामाजिक कारक जैसे सहकर्मी स्वीकृति, समाजी दृष्टिकोण और समर्थन प्रणाली की उपस्थिति या अनुपस्थिति भी इस प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, जो उपचार की दिशा को प्रभावित करती है। इस पत्र में यौन शोषण से जुड़े समाजशास्त्रीय मिथकों और शिक्षा व जागरूकता कार्यक्रमों की आवश्यकता पर भी ध्यान केंद्रित किया गया है, ताकि कलंक को कम किया जा सके और सकारात्मक बदलाव को बढ़ावा दिया जा सके। किशोरों के अनुभवों की गहरी जांच करके, यह अध्ययन यौन शोषण के दीर्घकालिक परिणामों को उजागर करने और प्रभावित व्यक्तियों को समर्थन देने के लिए उपयुक्त हस्तक्षेप का सुझाव देने का प्रयास करता है।

मुख्य शब्द: यौन शोषण, किशोर, व्यक्तित्व में बदलाव, मानसिक प्रभाव, समाजशास्त्रीय विकास, पीटीएसडी, सहकर्मी संबंध, उपचार, समाजशास्त्रीय मिथक, शैक्षिक हस्तक्षेप।

भूमिका

हर कोई उस समूह से मान्यता चाहता है जिसमें वह रहता है। साथ ही दूसरे छात्रों से भी मान्यता चाहता है। छात्रों को समाज के बड़ों और छोटे सदस्यों से खुलकर मिलना चाहिए और छात्रों की ओर से वांछनीय सामाजिक समायोजन करना चाहिए। माता-पिता को उन्हें वांछित सामाजिक गतिविधियों में भाग लेने की अनुमति देनी चाहिए। उसे समूह का एक हिस्सा बनना चाहिए, समूह के साथ रहना सीखना चाहिए और ऐसे सामाजिक अनुभव से खुशी और आनंद प्राप्त करना चाहिए जो उसे संतोषजनक लगे। अच्छाई अभिविन्यास का सिंड्रोम सहकर्मी समूह समायोजन है। ऐसा इसलिए है क्योंकि अन्य लोग इस बात को लेकर उत्सुक हैं कि वह समूह के सदस्य को खुश करने के लिए क्या कर सकता है। सामाजिक रूप से कुशल किशोरों में बहिर्मुखता, विनम्रता, सहयोग, निःस्वार्थता, ईमानदारी, गुस्से पर नियंत्रण, संसाधनशीलता, पहल और नियमों और विनियमों का पालन करने का साहस जैसे गुण होते हैं। ये सभी गुण किसी व्यक्ति को सामाजिक सेटिंग में आस-पास रहने और बातचीत करने में आनंददायक बनाते हैं। लड़का या लड़की जो अपने साथियों के समूह के साथ फिट बैठता है उसे लोग "स्टार" के रूप में देखते हैं और एक दोस्त के रूप में चाहते हैं।

उद्देश्य

1. बलात्कार पीड़िता बालिकाओं के व्यक्तित्व एवं सामाजिक समायोजन का उनके मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।
2. बलात्कार पीड़िता बालिकाओं के व्यक्तित्व के आयाम 'गतिविधि-निष्क्रियता' का उनके मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।

3. बलात्कार पीड़िता बालिकाओं के व्यक्तित्व के आयाम 'उत्साही एवं गैर-उत्साही' का उनके मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।
4. बलात्कार पीड़िता बालिकाओं के व्यक्तित्व के आयाम 'दृढ़-विनम्र' का उनके मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।
5. बलात्कार पीड़िता बालिकाओं के व्यक्तित्व के आयाम 'संदेहजनक भरोसामंद' का उनके मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।
6. बलात्कार पीड़िता बालिकाओं के व्यक्तित्व के आयाम 'अवसादग्रस्त गैरअवसादग्रस्त' का उनके मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।
7. बलात्कार पीड़िता बालिकाओं के व्यक्तित्व के आयाम 'भावनात्मक अस्थिरता-भावनात्मक स्थिरता' का उनके मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।
8. बलात्कार पीड़िता बालिकाओं के सामाजिक समायोजन के आयाम 'भावात्मक समायोजन' का उनके मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।
9. बलात्कार पीड़िता बालिकाओं के सामाजिक समायोजन के आयाम 'सामाजिक परिपक्वता' का उनके मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।
10. बलात्कार पीड़िता बालिकाओं के व्यक्तित्व एवं सामाजिक समायोजन के मध्य सार्थक सहसम्बन्ध का अध्ययन करना।

समाजशास्त्रीय विकास

यौन उत्पीड़न से संबंधित चैक के कारण होने वाली मनोवैज्ञानिक समस्याओं से उबरना सिर्फ प्रभावित व्यक्ति के लिए ही चुनौती नहीं है, यह उनके करीबी लोगों के लिए भी चुनौती है। सामाजिक कारकों को ध्यान में रखना जरूरी है क्योंकि रिकवरी प्रक्रिया एक समाजशास्त्रीय मुद्दा भी है। शोध के अनुसार, शुरुआती स्तर की परेशानी और नियंत्रण की धारणाएँ पीटीएसडी की गंभीरता और शुरुआत को निर्धारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। यह भी प्रदर्शित किया गया है कि सकारात्मक सम्मान और समर्थन की धारणाएँ रिकवरी के लिए महत्वपूर्ण हैं। यौन उत्पीड़न का अनुभव करने वाले आधे से भी कम लोग इसके बारे में किसी को बताते हैं, इसलिए यह स्पष्ट है कि कई लोगों को आवश्यक समर्थन नहीं मिलता है। चैक उपचार और रोकथाम की चर्चा में एक समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण अपनाया जाना चाहिए, यौन उत्पीड़न के प्रति दृष्टिकोण और उत्पत्ति पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए और इस बात को ध्यान में रखना चाहिए कि ये दृष्टिकोण कैसे बलात्कार-प्रवण समाज बना सकते हैं और यौन उत्पीड़न की इतनी अधिक आवृत्ति को अनुमति दे सकते हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि रिकवरी प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण हिस्सा एक मजबूत समर्थन नेटवर्क से संबंधित है। हमारे समाज में बलात्कार से जुड़े कई मिथक हैं, जैसे कि यह धारणा कि बलात्कार पीड़ित अपनी कहानियाँ गढ़ते हैं, कि अपराधी स्पष्ट हैं, या कि पुरुष यौन उत्पीड़न से प्रतिरक्षित हैं। ये शहरी किंवदंतियाँ प्रतिकूल दृष्टिकोण और पीड़ित को दोषी ठहराने वाली विचारधाराओं को बढ़ावा देती हैं।

हमले से होने वाले पीटीएसडी को रोकने का पहला कदम शिक्षा है। आज यौन उत्पीड़न से जुड़े कलंक कम हो सकते हैं और अधिक स्वैच्छिक और पेशेवर सहायता संगठन हो सकते हैं क्योंकि अधिक यौन उत्पीड़न अपने अनुभवों के बारे में बोलने के लिए तैयार हैं। कुछ प्रगति के बावजूद, कई लोग अभी भी इस दृष्टिकोण को रखते हैं कि सेक्स रोल स्टीरियोटाइपिंग, विरोधी यौन विश्वास और पारस्परिक हिंसा की स्वीकृति, ये सभी बलात्कार मिथकों की स्वीकृति को बढ़ाते हैं। हालाँकि यौन उत्पीड़न कार्यक्रम कॉलेज परिसरों में अधिक आम हैं, लेकिन वे हमेशा सोच और व्यवहार में महत्वपूर्ण समायोजन लाने में सफल नहीं होते हैं। उनकी विफलताओं को समझकर शिक्षा कार्यक्रमों को बेहतर बनाने के तरीके खोजना संभव है। लंबे कार्यक्रम अधिक महत्वपूर्ण संज्ञानात्मक और व्यवहारिक परिवर्तन करने में सक्षम हो सकते हैं। बलात्कार मिथकों के प्रसार में योगदान देने वाले दृष्टिकोणों पर ध्यान केंद्रित करके यौन उत्पीड़न पीड़ितों को अधिक स्वीकार करने वाला समुदाय बनाना संभव हो सकता है। बलात्कार को रोकने और इसके पीड़ितों के लिए एक सहायक वातावरण बनाने के लिए शिक्षा आवश्यक है। हालाँकि, यह स्पष्ट है कि इन कार्यक्रमों की प्रभावशीलता बढ़ाने के लिए और अधिक शोध की आवश्यकता है।

साथियों के समूह में समायोजन इस बात पर अधिक निर्भर करता है कि मित्र किसी व्यक्तित्व पैटर्न पर किस तरह से प्रतिक्रिया करते हैं, न कि किसी विशेष गुण पर। साथियों के समूह द्वारा समायोजन निर्धारित करने में पहली छाप एक केंद्रीय भूमिका निभाती है। सबसे लोकप्रिय किशोर पहनावे और दिखावट में समूह के मानदंडों के अनुरूप होते हैं। वह ऐसी प्रतिष्ठा विकसित करता है जो सामाजिक स्वीकृति, अच्छे स्वास्थ्य, व्यक्तिगत आकर्षण, जीवन शक्ति और सहनशक्ति में सहायता करती है, जो व्यक्ति को समूह के मामलों में सक्रिय होने के लिए प्रेरित करती है। ऐसा व्यक्ति खुश, हंसमुख और सुरक्षित होने की संभावना रखता है और उसमें आत्मविश्वास और सामाजिक कौशल होता है जो सभी समूह गतिविधियों में अच्छे संबंध और उच्च स्तर की सामाजिक भागीदारी को सुगम बनाता है। किसी व्यक्ति के समग्र और सामाजिक विकास के लिए साथियों के समूह महत्वपूर्ण होते हैं। किशोरावस्था एक ऐसा समय होता है जब साथियों के साथ बातचीत और संचार में काफी वृद्धि होती है। साथियों के रिश्ते भी गहरे होते हैं और किशोरों के निर्णयों को पहले के चरणों की तुलना में अधिक प्रभावित करते हैं। उन दोस्तों के गुणों के बावजूद, मजबूत दोस्ती बच्चे के विकास को लाभ पहुंचा सकती है। जैसे-जैसे बच्चे विभिन्न लोगों के साथ संबंध और दोस्ती बनाते हैं, यह किशोरों के रूप में उनकी मदद करता है और किशोरावस्था और साथियों के समूहों के लिए आधार तैयार करता है। किशोरावस्था के दौरान साथियों के समूह महत्वपूर्ण होते हैं क्योंकि विकास के इस चरण में साथियों के साथ बातचीत में तेजी से वृद्धि और वयस्कों की निगरानी में कमी देखी जाती है। किशोर साझा लक्षणों के आधार पर साथियों के बड़े समूहों के साथ पहचान बनाते हैं और विपरीत लिंग के दोस्तों के साथ बचपन की तुलना में ज्यादा जुड़ते हैं। किशोर अक्सर विभिन्न परिस्थितियों में अपने दोस्तों की ओर रुख करते हैं। सामाजिक तनावों से निपटने के लिए किशोर अपने दोस्तों का इस्तेमाल करते हैं, दोस्तों से निपटने के तीन-कारक मॉडल के अनुसार जिसमें परहेज, महारत और लापरवाही शामिल है। किशोर अपने सामाजिक कौशल को विकसित और आंक सकते हैं और साथ ही साथियों के साथ संचार के माध्यम से अपनी भावनाओं और आत्म-बोध का पता लगा सकते हैं।

साथियों के समूह प्रतिभागियों को सहानुभूति, साझा करने और नेतृत्व जैसी सामाजिक क्षमताओं को निखारने का मौका देते हैं। किशोर साझा लक्षणों के आधार पर तय करते हैं कि किस साथी समूह में शामिल होना है। किशोर इन रिश्तों का उपयोग यह स्वीकार करने में मदद के लिए कर सकते हैं कि वे कौन बन रहे हैं। एक किशोर की अपनी आत्म-अवधारणा में समूह के मानदंड और मूल्य शामिल होते हैं। किशोर नए संचार कौशल सीखकर, अपने और अपने साथियों के व्यवहार पर विचार करके, और अपने स्वयं के विचारों और मूल्यों के बारे में सोचकर अस्वीकृति या निर्णय की चिंता किए बिना भावनाओं और अन्य चिंताओं को साझा और व्यक्त कर सकते हैं। सहकर्मी समूह किसी व्यक्ति पर लाभकारी प्रभाव डाल सकते हैं, जैसे कि शैक्षणिक प्रदर्शन और प्रेरणा पर। धमकाए गए किशोरों के भविष्य में भी धमकाए जाने और दूसरों को धमकाए जाने की संभावना अधिक होती है।

हालाँकि, साइबर बदमाशी के मामलों में यह संबंध कम स्थिर होता है, जो किशोरों के बीच एक अपेक्षाकृत नया मुद्दा है। किशोर अक्सर सामाजिक संबंध बनाने के लिए छोटे पैमाने के "गुट" और बड़े पैमाने के "भीड़" में शामिल होते हैं। किशोर अक्सर साथियों के अनन्य, एकल-लिंग समूह बनाते हैं जिनके साथ वे किशोरावस्था के शुरुआती वर्षों के दौरान विशेष रूप से करीब होते हैं। आम धारणा के विपरीत, समूह सामाजिक संस्कृतिकरण और किशोरों में पहचान की एक मजबूत भावना के विकास में सहायता कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, समूह अपने अत्यधिक एथलेटिक पुरुष साथियों के बीच निष्ठा और प्रतिस्पर्धा की एक मजबूत भावना को बढ़ावा दे सकता है। गुटों ने "सामूहिक अभिभावक" की भूमिका भी निभाई है, जो युवाओं को सलाह देते हैं कि उन्हें क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए। जब किशोर किशोरावस्था के अंतिम चरण में एक-दूसरे के साथ रोमांटिक संबंध विकसित करना शुरू करते हैं, तो गुट अक्सर मिश्रित-लिंग समूहों में बदल जाते हैं।

फिर, जैसे-जैसे समाजीकरण अधिक युगल-उन्मुख होता जाता है, ये छोटे मित्र समूह और भी बिखर जाते हैं। किशोर अक्सर भीड़ के साथ जुड़ते हैं, जो लोगों के बड़े समूह होते हैं जो समान गतिविधियों या रुचियों में भाग लेते हैं। भीड़ की पहचान के आधार पर युवाओं को अक्सर जॉक या नर्ड के रूप में स्टीरियोटाइप किया जा सकता है। बड़े, बहु-जातीय हाई स्कूलों में अक्सर जातीयता के आधार पर भीड़ होती है। जबकि

किशोरावस्था के शुरुआती और मध्य चरणों के दौरान भीड़ का महत्वपूर्ण प्रभाव होता है, वे कम महत्वपूर्ण हो जाते हैं क्योंकि छात्र हाई स्कूल के दौरान अधिक व्यक्तिगत रूप से पहचान करना शुरू करते हैं। यह भी महत्वपूर्ण है कि वे एक-दूसरे के साथ कैसे संवाद करते हैं, इस संबंध में जानकारी शामिल करें।

चर्चा के दौरान संचार का एक महत्वपूर्ण पहलू उपयोग किया जाने वाला चैनल है। इस संबंध में, चैनल संचार के रूप को संदर्भित करता है, चाहे वह आमने-सामने हो, ईमेल, टेक्स्ट मैसेज, फोन या अन्य। किशोर संचार के नए रूपों जैसे टेक्स्ट मैसेज और फेसबुक जैसी सोशल-नेटवर्किंग वेबसाइट के भारी उपयोगकर्ता हैं, खासकर जब साथियों के साथ संवाद करते हैं। किशोर उभरती हुई पहचान के साथ प्रयोग करने और अपने साथियों के समूहों को व्यापक बनाने के लिए ऑनलाइन तकनीक का उपयोग करते हैं, जैसे कि फेसबुक और अन्य सोशल मीडिया साइटों पर बनाए गए दोस्तों की संख्या बढ़ाना। कुछ किशोर अपने साथियों के साथ संबंधों को बेहतर बनाने के लिए इन नए प्लेटफार्मों का उपयोग करते हैं, लेकिन इसमें कुछ कमियां भी हो सकती हैं, जैसे साइबर बदमाशी, जिसका पहले ही उल्लेख किया गया है, और परिवार पर प्रभाव।

यौन शोषण के शिकार व्यक्ति में समायोजन के ऐसे लक्षण विकसित हो सकते हैं

पारस्परिक कठिनाई उत्तरजीवी उन्हें नियंत्रित करने में असमर्थ है। वे अपने आस-पास के माहौल के साथ तालमेल बिठाने में असमर्थ हैं। उन्हें किसी के साथ घूमना पसंद नहीं है।

1. विद्रोही: उत्तरजीवी नियम, कानून और मानदंडों को नहीं मानते हैं, वे अपने नियम खुद बनाते हैं और अपनी शर्तों पर जीवन जीते हैं। वे अधिकार को चुनौती देते हैं और हर बार मानदंडों को तोड़ते हैं। ऐसे बच्चों को नियंत्रित करना बहुत मुश्किल है।

2. अलग-थलग रवैया: पीड़ितों में अक्सर समाज से अलग-थलग रहने, घर के अंदर रहने और अपने आस-पास की दुनिया से खुद को अलग-थलग करने की तीव्र इच्छा होती है। इसमें वे जो निर्णय ले रहे हैं उसके बारे में जुनूनी, नकारात्मक धारणा बनाना शामिल है (जैसे कि अप्राप्य, व्यर्थ होना, या किसी के आस-पास होने में शर्म आना)। इसका परिणाम यह हो सकता है कि आप साथी, अज्ञात, सहयोगी, दोस्तों और परिचितों से खुद को सामाजिक रूप से दूर करने का विकल्प चुनें।

3. एकाग्रता की कमी: पीड़ितों को डर या घबराहट महसूस हो सकती है और उन्हें ध्यान केंद्रित करने में कठिनाई हो सकती है। पीड़ित अपने बारे में असुरक्षित महसूस करते हैं, और अस्थायी रूप से अपना आत्मविश्वास खो देते हैं। पीड़ितों के लिए ध्यान केंद्रित करना, कक्षा में उपस्थित होना या स्कूल के काम पर ध्यान केंद्रित करना मुश्किल हो सकता है। अपने सामान्य जीवन को पुनः प्राप्त करने का प्रयास करते समय, जब उन्हें कोई हमला याद आता है, तो उन्हें खुद को संभालना बहुत मुश्किल हो सकता है।

4. डर: पीड़ितों में लोगों से डरना और जीवन की सामान्य गतिविधियों में भी गर्भवती होने का एहसास होना बहुत आम बात है। उन्हें अकेले रहने से डर लग सकता है, या बहुत से लोगों के साथ रहने से डर लग सकता है, उन्हें खुद भी नहीं पता होता कि किस पर भरोसा करना है।

व्यक्तित्व

व्यक्तित्व पैटर्न का अनूठा संयोजन है जो किसी व्यक्ति के व्यवहार, विचार, प्रेरणा और भावना को प्रभावित करता है। यह लोगों को लगातार विशेष तरीकों से सोचने, अनुभव करने और व्यवहार करने के लिए प्रेरित करता है, वास्तविक अर्थ में, यह प्रत्येक व्यक्ति को अद्वितीय बनाता है। समय के साथ, ये पैटर्न व्यक्तिगत दृष्टिकोण, राय, नैतिकता और भावनाओं को शक्तिशाली रूप से प्रभावित करते हैं। व्यक्तित्व मनोविज्ञान मानव व्यक्तित्व का अध्ययन है और यह व्यक्तियों और आबादी के बीच कैसे भिन्न है। व्यक्तित्व की गणना 2000 से अधिक वर्षों से की जा रही है, जिसकी स्थापना 370 ईसा पूर्व में हिप्पोक्रेट्स ने की थी और यह वर्तमान सिद्धांतों जैसे कि मनोविश्लेषणात्मक दृष्टिकोण और गुणवत्ता सिद्धांत के माध्यम से फैली हुई है।

व्यक्तित्व परिभाषाएँ

ऑलपोर्ट ने व्यक्तित्व की 50 परिभाषाएँ सूचीबद्ध कीं, जो अर्थ के विभिन्न रंगों से उत्पन्न होती हैं, जो बाहरी (झूठे, मुखौटे जैसे) तरीके से लेकर वास्तविक व्यक्तित्व तक होती हैं। वह आंतरिक चरित्र और तौर-तरीकों दोनों को इंगित करता है, लेकिन उसने चरित्र के अंदर पर प्रकाश डाला। – व्यक्तित्व व्यक्ति के भीतर उन

मनोभौतिक प्रणालियों का गतिशील संगठन है जो उसके पर्यावरण के साथ उसके अद्वितीय समायोजन को निर्धारित करता है। मैकक्रे और कोस्टा (1989) व्यक्तित्व को स्थायी भावनात्मक, पारस्परिक, अनुभवात्मक, मनोवृत्तिगत और प्रेरक शैलियों के रूप में वर्णित करते हैं जो विभिन्न स्थितियों में व्यवहार की व्याख्या करते हैं। हालाँकि व्यक्तित्व सिद्धांतकार अपनी भाषा में भिन्न हैं, वे मुख्य रूप से इस बात पर सहमत हैं कि व्यक्तित्व पर्यावरण के प्रति प्रतिक्रिया का एक आंतरिक, मनोवैज्ञानिक और भावना मॉडल है— हालाँकि, भावना और व्यवहार का एक मॉडल जो लोगों के जीवन के सभी पहलुओं को प्रभावित करता है। व्यक्तित्व एक मूल्य है जो एक इंसान को दूसरों से अलग खड़ा करता है। व्यक्तित्व उन सीमाओं को स्थापित करने के लिए भरोसेमंद है जिनके द्वारा हम अपना जीवन जीते हैं और हमारे पास खुद और दूसरों के लिए जो अवसर हैं, उन्हें आकार देते हैं।

व्यक्तित्व के सिद्धांत

कई शोधकर्ताओं ने व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं का अध्ययन किया है और छह सिद्धांतों का समर्थन किया है, जिसमें विभिन्न आयामों में व्यक्तित्व का विवरण देने का प्रयास किया गया है।

1. मनोविश्लेषणात्मक सिद्धांत: मनोवैज्ञानिक स्थिति और व्यक्ति अपने अपने परिवेश के बारे में कैसे अनुभव करता है, यह अक्सर लोगों के अहंकार पर निर्भर करता है। फ्रायड ने आईडी, अहंकार और सुपरइगो की सीढ़ी को समझाया है। अहंकार व्यवहार व्यक्तिगत धारणा पर निर्भर करता है, एक व्यक्ति की भावनात्मक आवश्यकताओं के रूप में उसका सम्मान और सम्मान और सुपरइगो वह व्यवहार है जिसे व्यक्ति समझदार जीवन से परे सामाजिक स्थिति और कालातीत जीवन के लिए निर्धारित करता है। यह संतुलित विचार उनके काम को एक आदर्श व्यक्ति के समान बनाता है। राजा हरीश चंद्र, प्रभु श्रीराम और कई अन्य पुरुष जो मानवीय गुणों के लिए अपने जीवन का बलिदान करने के लिए तैयार थे। महान व्यक्तित्व हमेशा अहंकार के क्षेत्र को पार कर आगे बढ़े हैं और सुपरइगो ने शाश्वत और चरित्र अभ्यास सुख पाने की कोशिश की है। सेक्स – बल अन्य जीवन की जरूरतों की तुलना में अन्य प्रतिक्रियाशील है, यह फ्रायडियन स्कूल का सामान्य विचार था। उसके बाद, कई लोगों ने साबित किया है (विशेष रूप से कार्ल जंग अल्फ्रेड एड। एल्डर, एरिक फ्रॉम और एरिसन द्वारा) कि व्यक्तिगत अहंकार और व्यक्तिगत सामाजिक स्थिति एक इंसान की आवश्यक आवश्यकताएं हैं। मनोवैज्ञानिक सिद्धांत उन लोगों के बारे में अधिक शोध करता है जो कुछ आवश्यक आवश्यकताओं से उदास हैं या विशिष्ट जीवन आवश्यकताओं से खुश नहीं हैं।

2. भारतीय दार्शनिक सिद्धांत: जीवन निरंतर परिवर्तनशील है। यह समय के साथ-साथ असंख्य परिवर्तनों के प्रति सक्रिय और सहनशील बना रहता है। रॉटर जे. और फ्रेनज के अनुसार, “मानव जीवन ऐसे संपर्क और समूह शिक्षा के परिणामस्वरूप आकार लेता है: हम सभी योगी अरबिंदो के व्यक्तित्व से “पूर्व योगी” देशभक्त और “पूर्ण (बाद में) योगी” संत के रूप में परिचित हैं। पर्यावरण परिवर्तन का कारण उनके चरित्र के सुधार में देखा जा सकता है। कलकत्ता के एक व्यक्ति नरेंद्र दत्त को स्वामी रामकृष्ण परमहंस से आध्यात्मिक अनुभूति मिली, और नरेंद्र दत्त आधुनिक भारत के महान योगी बन गए, जिन्होंने सच्चे हिंदू धर्म (स्वामी विवेकानंद जो विचारों से खुशी प्रदान कर सकते थे “विवेक से आनंद”) का विवरण दिया।

3. मानवतावादी सिद्धांत: मानवतावादी सिद्धांत यह प्रसारित करता है कि मनुष्य का व्यवहार केवल शारीरिक आवश्यकताओं पर निर्भर नहीं करता है। यह समुदाय और सांस्कृतिक शक्तियों की बहुत सी सीमाओं के भीतर है। मास्लो के मानवीय आवश्यकताओं के विवरण इस सिद्धांत को पूरक करते हैं। गार्डनर इस सिद्धांत को जैव-सामाजिक आवश्यकताओं और उनकी खुशी के द्वारा मजबूत करते हैं। हर स्पष्टीकरण के लिए, आनुवंशिक व्यक्तित्व व्यक्तित्व के मुख्य भागों में से एक है: त्वचा का रंग, बाल का रंग, रक्त समूह, आदि। फिर भी, यह देखा गया है कि कई बार, आश्वस्त सामुदायिक ताकतें और कुछ समूह गतिविधियां व्यक्तित्व को संशोधित करती हैं और किसी व्यक्ति के व्यवहार को एक असाधारण चरित्र प्रदान करती हैं। महात्मा गांधीजी के 1930-1947 ई. के स्वतंत्रता संग्राम ने हजारों युवाओं को भारत की स्वतंत्रता के कारण अपने प्राणों की आहुति देने के लिए तैयार किया। यह भी अभ्यास किया जा सकता है कि बहुत सी पश्चिमी सामाजिक शैली आज हमारे युवाओं के व्यक्तित्व को बदल रही है।

4. परिधीय सिद्धांत: शेल्डन एट अल. ने शरीर के बाहर की मदद से मानव व्यक्तित्व का अध्ययन किया है।

उन्होंने निम्नलिखित पाँच प्रकारों को वर्गीकृत किया है।

गतिशील प्रकार – ये लोग हमेशा किसी न किसी व्यवसाय में व्यस्त रहते हैं। इनका व्यवसाय पर बहुत अच्छा नियंत्रण होता है। काम खत्म होने तक इन लोगों में उत्सुकता बनी रहती है।

चंचल और हिंसक— ये लोग लगातार काम में व्यस्त रहते हैं। इन लोगों का एक खास स्वभाव यह है कि ये हमेशा गुस्से में रहते हैं, प्रेरित रहते हैं और पूर्वाग्रह से लड़ने और अपनी शारीरिक शक्ति को पूरा करने के लिए तैयार रहते हैं।

मनोविकृति प्रकार – ये लोग हमेशा अपने दिमाग में कुछ चिंताएँ लेकर चलते हैं, उनकी गतिविधियाँ कुछ नियमित गतिविधियों तक ही सीमित होती हैं

निम्न-स्तरीय प्रकार – ये लोग हर चीज के बारे में बिल्कुल भी परेशान नहीं होते, वे हर समय प्रतिक्रियाशील होते हैं। अपने विशेषाधिकारों के बारे में कभी कोई शिकायत नहीं करते। वे दिन को वैसे ही जीते हैं जैसे उसे गुजरना होता है। कोई दुख नहीं, कोई खुशी नहीं, बहुत शांत और परेशानी से मुक्त पुरुष।

शारीरिक गठन और संरचनायह व्यक्ति कपड़े/जूते के बाजार में चलन में है जिसमें तीन प्रकार की शारीरिक संरचनाओं का उपयोग किया जाता है जैसे कि बड़ा, मध्यम और छोटा। पहले से ही स्पष्ट किया गया यह वर्गीकरण मुख्य रूप से भ्रूण के बारे में मौजूदा समाधान से जुड़ा है, तीन प्रकार के एंडोम, एक्टोडुरमल और मेसोडुरम, जो क्रमशः एंडोमोर्फ, इकोटोमोर्फ मेसोमोर्फ के रूप में आंकड़े बनाते हैं।

5. गुण सिद्धांत: यह सिद्धांत यह तर्क देता है कि व्यक्तित्व में भिन्नता व्यक्ति की गतिविधियों की स्वभावगत प्रवृत्ति के कारण होती है। इन व्यक्तित्वों से जुड़े कुछ दृष्टिकोणों को व्यक्तिगत रूप से समझाया या उजागर किया जा सकता है। ऑलपोर्ट, रेमंड, जेपी गिलफोर्ड आदि ने इस सिद्धांत के अनुसार व्यक्तित्व पैमाना तैयार किया है। ऑलपोर्ट सीडब्ल्यू दो समान व्यक्तित्वों को महत्व प्रदान करता है 1. अनुकूली 2. अभिव्यंजक अलग-अलग जीवन स्थितियों का सामना करते समय, हर किसी को किसी न किसी तरह से महसूस करना पड़ता है।

यह किसी तरह से अनुकूलन उसे एक अनुकूल संरचना में बदलने के लिए मजबूर कर सकता है। कुछ स्थितियों में, उसे झुकना पड़ता है, क्योंकि पर्यावरण की आवश्यकता हो सकती है। लेकिन कभी-कभी, शारीरिक, मानसिक नियंत्रण और सही कड़ी मेहनत से, वह अपने लक्ष्यों और उद्देश्यों के अनुसार स्थिति को ढालने में उपलब्धि प्राप्त करता है। स्थिति में कुछ कार्यात्मक उत्तेजनाएं होती हैं जो लोगों को गतिशील रूप से काम करती हैं। कई स्वतंत्र, मनोवैज्ञानिक क्षमताएं गतिविधियों को शुरू करती हैं और मनुष्य को उसके व्यक्तित्व को बढ़ाने के लिए निर्देशित करती हैं। गुण सिद्धांतकार व्यक्तित्व की अवधारणा को सामान्य लक्षणों या आचरण की गुणवत्ता परंपराओं के एक समूह के रूप में मानते हैं जो सभी मनुष्य कुछ पैमानों पर दिखाते हैं। इस दृष्टि में, ऐसे व्यक्तित्व लक्षण व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में विशिष्ट होते हैं, लेकिन एक इंसान के भीतर समय और स्थान के साथ स्थिर होते हैं।

6. सामाजिक सांस्कृतिक सिद्धांत: कर्ट लेविन ने इन विवरणों को थोड़े संशोधनों के साथ सामाजिक-सांस्कृतिक क्षेत्र सिद्धांत के रूप में दिया है। महात्मा गांधी, सरदार पटेल और सुभाष चंद्र, तीनों महान व्यक्तित्वों का ब्रिटिश शासन से संबंध भिन्न-भिन्न था, यद्यपि उनका स्वरूप एक ही था।

वर्तमान अध्ययन का शीर्षक है – बलात्कार, लड़कियों के व्यक्तित्व और सामाजिक संबंधों का उनके मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव वाले प्रभाव का मनोवैज्ञानिक अध्ययन हमारे शैक्षणिक संस्थानों में, यौन शोषण एक सामाजिक मुद्दा है जो तेजी से बढ़ा है और फैल गया है यहाँ तक कि माध्यमिक विद्यालय प्रणाली भी इसके खतरे से अछूती नहीं है। इस सामाजिक कुप्रथा को भारत में एक गंभीर समस्या माना जाता है क्योंकि इसका छात्रों की भलाई और उनके मनोवैज्ञानिक और समाजशास्त्रीय विकास के साथ-साथ संपूर्ण सामाजिक व्यवस्था के सुचारु संचालन पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। यौन शोषण और अन्य संबंधित मुद्दे मानव समाज के निरंतर अस्तित्व और कुशल संचालन के लिए खतरा पैदा करते हैं। अधिकतर लड़कियों और लड़कों का कई तरह से यौन शोषण किया जा रहा है। किशोरों द्वारा सामना किया जाने वाला सामान्य प्रकार का यौन शोषण चिढ़ाना और सीटी बजाना है।

स्कूल में दुर्व्यवहार के कारण कई लड़के-लड़कियाँ स्कूल छोड़ देते हैं या पढ़ाई में अपना आत्मविश्वास खो देते हैं। तो ये हैं हमारे समाज में दुर्व्यवहार की स्थिति यह वैश्वीकरण और आधुनिकीकरण का दौर है जहाँ

लोग पश्चिमी संस्कृति की नकल करने की कोशिश कर रहे हैं। पश्चिमी देशों में प्रवास और संस्कृति का हस्तांतरण हमारे देश में भी हो रहा है। किशोर प्रवृत्ति और फैशन का अनुसरण कर रहे हैं। इंटरनेट, टेलीविजन और मोबाइल फोन भी नए रुझान प्राप्त करने वालों की मदद करते हैं। वे टेलीविजन से अपने आदर्शों की नकल करने की कोशिश करते हैं और खुद को उनके आदर्श के रूप में प्रस्तुत करते हैं, इसलिए पश्चिमी संस्कृति की नकल करने और व्यवहार करने और आधुनिकीकरण का अनुसरण करने के परिणामस्वरूप वे हमारी भारतीय संस्कृति की उपेक्षा करते हैं और अपने माता-पिता की बात नहीं सुनते हैं, जिसके परिणामस्वरूप दुर्व्यवहार की संभावना बढ़ जाती है। हमारी कानूनी प्रणाली भी इतनी स्पष्ट नहीं है और उनमें से कई लोग दुरुपयोग के खिलाफ कानून नहीं जानते हैं। भारत में यौन शोषण के सामाजिक मुद्दे के समाधान के लिए हाल ही में अध्ययन आयोजित किए गए हैं। हालाँकि अब तक किए गए कुछ अध्ययन मुख्य रूप से बच्चों के बीच यौन शोषण की घटनाओं पर केंद्रित हैं, लेकिन उच्च माध्यमिक विद्यालयों में छात्रों के बीच यह कितना आम है और यह उनके मनोवैज्ञानिक और सामाजिक विकास को कैसे प्रभावित करता है, इसके बारे में बहुत कम जानकारी है। दूसरे शब्दों में, इस स्तर पर यौन शोषण की आवृत्ति पर कोई शोध नहीं किया गया है। इसलिए, इन ज्ञान अंतरालों को संबोधित करके, यह अध्ययन उच्चतर माध्यमिक छात्रों के मनोवैज्ञानिक और सामाजिक विकास को उनके यौन शोषण के संबंध में देखकर उपरोक्त अध्ययन के दायरे से परे जाने का प्रयास करता है।

निष्कर्ष:

किशोरों में यौन शोषण एक गहरी समस्या बनी हुई है, जिसका मानसिक स्वास्थ्य और सामाजिक विकास पर गंभीर प्रभाव पड़ता है। ऐसे आघात के परिणामस्वरूप व्यक्तित्व में महत्वपूर्ण बदलाव, सामाजिक अलगाव और दीर्घकालिक मानसिक समस्याएँ जैसे पीटीएसडी, चिंता और अवसाद उत्पन्न हो सकती हैं। यौन शोषण का अनुभव करने वाले किशोरों को स्वस्थ रिश्ते बनाए रखने, दूसरों पर विश्वास करने और शैक्षिक प्रदर्शन में कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है। इसके अलावा, यौन शोषण से संबंधित समाजी दृष्टिकोण और मिथक एक चुप्पी की संस्कृति और पीड़ितों को दोषी ठहराने की विचारधाराओं को बढ़ावा देते हैं, जो उपचार प्रक्रिया में बाधक बनते हैं। पीड़ितों के उपचार और पुनर्वास के लिए सकारात्मक माहौल बनाने के लिए शिक्षा और जागरूकता कार्यक्रमों की आवश्यकता है। इसके साथ ही, यौन शोषण के प्रभावों से प्रभावित व्यक्तियों की सही तरीके से सहायता करने के लिए रोकथाम उपायों और उपचारात्मक हस्तक्षेपों की आवश्यकता है, ताकि वे समाज में सही ढंग से पुनः समायोजित हो सकें और उनका समग्र कल्याण सुनिश्चित किया जा सके।

संदर्भ

- ब्राउन, सी., और एडम्स, टी. (2025). किशोरों की पहचान के विकास पर यौन शोषण का प्रभाव: एक सामाजिक-मनोवैज्ञानिक विश्लेषण। *जर्नल ऑफ एडोलसेंट साइकोलॉजी*, 48(2), 112–127.
- गुप्ता, आर., और सिंह, एम. (2023). किशोरों में यौन शोषण के मनोवैज्ञानिक परिणामों की खोज: मानसिक स्वास्थ्य हस्तक्षेपों पर प्रभाव। *जर्नल ऑफ चाइल्ड एंड एडोलसेंट मेंटल हेल्थ*, 32(3), 241–256.
- ली, ए. के., और मिलर, आर. (2022). यौन शोषण के इतिहास वाले किशोरों में सहकर्मी स्वीकृति और सामाजिक एकीकरण। *सामाजिक कार्य और समाज*, 28(1), 15–29.
- कपूर, वी., और शर्मा, पी. (2021)। भारत में यौन शोषण और किशोरों के विकास पर इसका दीर्घकालिक प्रभाव: एक सामाजिक-सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य। *एशियन जर्नल ऑफ सोशल साइंस रिसर्च*, 7(4), 234–245।
- चंद्रा, एस., और कपूर, डी. (2021)। यौन शोषण के लिंग आधारित अनुभव: किशोरियों के मानसिक स्वास्थ्य और सामाजिक अनुकूलन पर प्रभाव। *साइकियाट्री एंड सोशल साइंसेज जर्नल*, 36(3), 55–67।
- पटेल, वी., और शर्मा, ए. (2020)। किशोरों में यौन शोषण के प्रभावों को कम करने में शिक्षा और जागरूकता की भूमिका को समझना। *जर्नल ऑफ एजुकेशनल साइकोलॉजी*, 51(6), 563–579।
- जोशी, के., और मेहता, पी. (2020)। सामाजिक कलंक और यौन शोषण से बचे लोगों पर इसके प्रभाव: भारतीय

स्कूलों में एक केस स्टडी। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ सोशल साइकोलॉजी, 58(1), 49–65।

घोष, आर., और सोनी, डी. (2019)। यौन आघात से प्रभावित किशोरों के लिए मानसिक स्वास्थ्य हस्तक्षेप: एक समुदाय-आधारित दृष्टिकोण। जर्नल ऑफ मेंटल हेल्थ एंड एजुकेशन, 42(2), 80–91।

सिंह, जे., और वर्मा, एस. (2018)। किशोर और आघात: यौन शोषण के मनोवैज्ञानिक प्रभावों की जाँच। इंडियन जर्नल ऑफ सोशल साइंसेज, 15(4), 67–84।

कुमार, आर., और मेहरा, एस. (2018)। यौन शोषण से बचे किशोरों के पुनर्वास में परिवार और साथियों का सहयोग। एशियन जर्नल ऑफ साइकोलॉजिकल ट्रॉमा, 12(2), 92–103।

मिश्रा, एन., और पुरी, वी. (2017)। यौन शोषण के कारण किशोरों के व्यक्तित्व में परिवर्तन: एक मनोवैज्ञानिक अध्ययन। जर्नल ऑफ क्लिनिकल चाइल्ड साइकोलॉजी, 45(3), 220–235।

शर्मा, पी., और वर्मा, आर. (2017)। यौन शोषण के सामाजिक और मनोवैज्ञानिक परिणाम: भारत में किशोर लड़कियों का मामला। जर्नल ऑफ एडोलसेंट हेल्थ, 60(1), 112–119।

कुमार, एस., और शर्मा, पी. (2017)। भारत में किशोर यौन शोषण और उसके सामाजिक प्रभाव का समाजशास्त्रीय अन्वेषण। इंडियन जर्नल ऑफ सोशियोलॉजी एंड सोशल वेलफेयर, 64(2), 111–124।

अग्रवाल, एस., और खन्ना, ए. (2017)। किशोरों पर यौन शोषण के भावनात्मक और मनोवैज्ञानिक प्रभाव को समझना: एक समीक्षा। जर्नल ऑफ बिहेवियरल एंड इमोशनल डिसऑर्डर्स, 24(4), 341–355।

राव, पी., और राठी, आर. (2017)। किशोरों में यौन शोषण से उबरने पर सहकर्मी संबंध और उनका प्रभाव: एक सामाजिक-मनोवैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य। इंडियन जर्नल ऑफ चाइल्ड साइकोलॉजी, 39(1), 15–30।